महामारी के दौर में ऑनलाइन क्षमतासंवर्धन के अनुभव

अर्चना कुमारी

महामारी के इस दौर ने सीखने-सिखाने के माध्यम में एक ख़ास परिवर्तन कर दिया। एक लम्बे समय तक शिक्षा का कामकाज कम्प्यूटर और मोबाइल के माध्यम से चला। बच्चों की कक्षाएँ भी ऑनलाइन ही हुईं और शिक्षकों के साथ बातचीत और प्रशिक्षण का माध्यम भी यही था। लेखिका ने इस लेख में ऑनलाइन शिक्षण के सन्दर्भ में अपने अनुभव रखे हैं। वे रेखांकित करती हैं कि ख़ासकर बच्चों के सीखने-सिखाने के सन्दर्भ में ऑनलाइन शिक्षण इतना कारगर नहीं है। पर साथ ही वे वास्तविकता को स्वीकारते हुए यह भी कहती हैं कि मौजूदा परिस्थितियों के मद्देनज़र यह कोशिश की जा सकती है कि जो सम्भव है उसका बेहतर उपयोग कैसे कर सकते हैं। सं.

हम सीखने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से कब तैयार होते हैं? वे कौन-कौन से कारक होते हैं जो सीखने को प्रभावित करते हैं? ये प्रश्न काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। वैसे तो इंसान की प्रवृत्ति में ही होता है हर पल, हर परिस्थिति में कुछ-न-कुछ सीखते रहना। लेकिन मैं यहाँ जिस सीखने की बात कर रही हूँ वह कई मायनों में अलग है। वह कैसे अलग है और इसके बारे में मैं क्यों बात कर रही हूँ?

पिछले क़रीब एक-डेढ़ साल से कोविड की वजह से शिक्षकों के साथ हमारे अधिकतर कार्य ऑनलाइन माध्यम से किए जा रहे हैं। इससे पहले शिक्षकों के साथ वर्चुअल रूप में जुड़ने का अनुभव सिर्फ़ फ़ोन कॉल और व्हाट्सएप तक ही सीमित रहा है। यह फ़ोन कॉल भी केवल सूचना आदान-प्रदान और हालचाल तक ही सीमित थे, किसे पता था ऐसा वक़्त आने वाला है जब हमारी निर्भरता इन इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों पर इतनी अधिक बढ़ जाएगी। पिछले एक साल में शिक्षकों के साथ विभिन्न ऑनलाइन मंचों पर कार्य करने का बहुत ही अलग अनुभव रहा। इस एक साल में क्षमतासंवर्धन ऑनलाइन को लेकर कई बातें स्वयं मुझे भी सीखने को मिलीं जिसे इस लेख में पिरोने की कोशिश कर रही हूँ। मेरा मानना है कि अपने विचारों को लिखने से न सिर्फ़ अनुभव को संयोजित करने में मदद मिलती है बल्कि उसका बारीक़ी से विश्लेषण कर आगे की योजना बनाने में भी मदद मिलती है।

अपने अनुभवों को मैंने कुछ कारकों में विभाजित किया है। इसका यह कतई अर्थ नहीं है कि केवल यही कारक हो सकते हैं। इनके अलावा भी कई बातों को शामिल किया जा सकता है लेकिन मेरे अनुसार इन 5 कारकों के महत्त्व को समझना ज़्यादा ज़रूरी है।

1. उपयुक्त और सरल विषय सामग्री

जब भी किसी शिक्षक समूह के साथ किसी विषय को लेकर बात करनी होती है तो योजना बनाना पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण चरण होता है। योजना में शिक्षक की आवश्यकतानुसार प्रभावी एवं रुचिकर विषय सामग्री तैयार करना शामिल है। वैसे तो सभी विषय के लगभग सभी टॉपिक की सामग्री उपलब्ध है, लेकिन

थोड़े विस्तार से किसी सत्र की योजना बनाना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए, जब शिक्षकों की आवश्यकतानुसार उनके साथ ध्वनि जागरूकता और कविता शिक्षण पर कार्य करना था तो ऑनलाइन मंच के माध्यम से कैसे इन मुद्‌दों पर बात की जाए, इसे लेकर बहुत ही असमंजस की स्थिति थी क्योंकि ऑनलाइन मंचों में बातचीत तो ख़ूब की जा सकती है लेकिन प्रदर्शन करने की गुंजाइश कम रहती है। शासकीय शिक्षकों के साथ लम्बे समय से कार्य करने का अनुभव यह अवश्य कहता है कि उन्हें भाषणबाज़ी से ज़्यादा सटीक उदाहरणों एवं उसपर विचार विमर्श में अधिक रुचि होती है। इन उदाहरणों के पीछे की अवधारणा को वे ख़ुद कक्षा में करते समय समझने योग्य होते हैं। जैसे– 'कविता शिक्षण और ध्वनि जागरूकता' की इस चर्चा के दौरान कई शिक्षक इस बात को बख़ूबी रख पा रहे थे कि उन्हें भी लगता है कि बारहखड़ी से बच्चों को पढ़ना सीखने में बहुत अधिक समय लगता है और कई बच्चे फिर भी नहीं सीख पाते हैं। इसलिए कविता-कहानियों का ज़्यादा-से-ज़्यादा उपयोग करना चाहिए, लेकिन यह उपयोग पढ़ने में कैसे मदद करेगा इसे लेकर शिक्षक विस्तार से नहीं बता पा रहे थे क्योंकि उन्होंने ऐसा करते किसी को कभी देखा नहीं और न ही किसी का अनुभव सुना था।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए सत्र योजना तैयार करने के दौरान मैंने कविता शिक्षण में ध्वनि जागरूकता पर कार्य करने के कुछ वीडियो तलाशे, ताकि शिक्षक ऑनलाइन माध्यम में आसानी से जुड़ सकें और उसकी उपयोगिता भी समझ सकें। इसके अतिरिक्त कुछ प्रयास जो शिक्षक कक्षा शिक्षण के दौरान करते आए हैं उन्हें व्यवस्थित करना भी इस योजना में शामिल था। जैसे– कविता में आए कुछ चुनिन्दा मात्रा वाले शब्दों पर कार्य करना (बजाय इसके कि सभी मात्राओं वाले शब्दों पर एक साथ कार्य करें), तुकान्त शब्दों पर कार्य करना, बच्चों के साथ बातचीत के मुद्‌दे पहले से तैयार करना (इसकी प्रेक्टिस ऑनलाइन सत्र में भी की गई जो शिक्षकों को काफ़ी मज़ेदार लगी), आदि। साथ ही चर्चा के दौरान प्रयोग में आने वाले पीपीटी में अधिक-से-अधिक पाठ्‌यपुस्तकों के स्क्रीनशॉट को शामिल करना काफ़ी उपयोगी रहा क्योंकि शिक्षकों के कई सवालों के उत्तर पाठ्‌यपुस्तक में आसानी से मिल गए थे, लेकिन शिक्षकों ने पाठ्‌यपुस्तक में सिर्फ़ कहानी-कविता को पढ़ा था, उसके साथ क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं न तो इसपर विचार किया और न ही अभ्यास में इन प्रश्नों को देखा था। कुछ कार्य पत्रक के सैंपल पर चर्चा कर शिक्षकों से इसका निर्माण करवाना भी इस दौरान काफ़ी कारगर रहा। लेकिन इसमें सभी शिक्षकों की रुचि एक जैसी नहीं थी।

इसी तरह गणित की चर्चाओं में भी सवालों का इस्तेमाल, पाठ्‌यपुस्तक के उदाहरण, इबारती सवालों को बनवाना, पहेलियाँ, चित्र, टीएलएम के प्रयोग का प्रदर्शन, प्रासंगिक वीडियो, चुनिन्दा लेख, आदि ऑनलाइन बातचीत को रुचिकर एवं प्रभावी बनाने में मदद करते हैं।

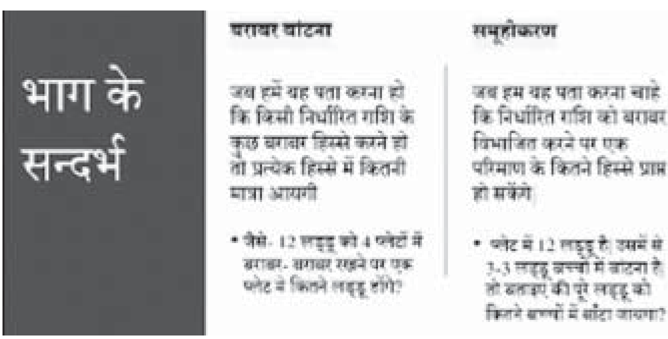

चित्र 1 : गणित में भाग की अवधारणा का उदाहरण

विज्ञान विषय की चर्चाओं में भी प्रयोगों के प्रदर्शन के लिए शिक्षक या सुगमकर्ताओं के द्वारा बनाए गए वीडियो, चित्रों, सवालों, लेख, पाठ्‌यपुस्तक के उदाहरण से अधिक मदद मिली। इसमें प्रत्येक अवधारणा

के लिए प्रभावी पीपीटी ने भी बहुत सहयोग किया। अगर इन सबकी बजाय सिर्फ़ लेख या बातचीत के माध्यम से किसी अवधारणा पर चर्चा होती तो शायद एक लम्बे समय तक शिक्षकों को जोड़ने में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता जिसका अनुभव भी हमें कई विषय / अवधारणाओं में हुआ जहाँ समय और अनुभव की कमी से इतनी विस्तृत तैयारी नहीं हो पाई।

2. शिक्षिकाओं की सहभागिता

इस पूरे अन्तराल में महिला शिक्षिकाओं की सहभागिता कई मायनों में बेहतर रही। वे न सिर्फ़ विभिन्न विषयों की चर्चाओं में जुड़ीं बल्कि अपने सवाल, चुनौती एवं अनुभव रखने में पुरुष शिक्षकों से आगे दिखीं (जिन चर्चाओं में मैं शामिल रही उनके, मेरे अवलोकन के अनुसार, अन्य साथियों के अलग अनुभव भी हो सकते हैं)। हम सभी परिचित हैं कि घर में रहने पर महिलाओं की ज़िम्मेदारी काफ़ी हद तक बढ़ जाती है। इसके अलावा कोविड में ख़ुद की सेहत का ध्यान रखना एक और बड़ी चुनौती है। ऐसा नहीं है कि ये सारी चुनौतियाँ पुरुष शिक्षकों को नहीं रहीं लेकिन महिलाओं की तुलना में शायद कम रही हैं। इसके बावजूद महिला शिक्षकों के विभिन्न विषयों में ख़ुद के क्षमतावर्धन को लेकर किए गए प्रयास अधिक दिखे। पुरुष शिक्षकों की भागीदारी इंग्लिश कोर्स जैसे विषय में अधिक देखने को मिली। कई महिला शिक्षकों को ख़ुद के बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई के लिए अपने मोबाइल से दूर होना पड़ा और अकसर कई चर्चाओं में वे बीच में कई कारणों से डिस्कनेक्ट भी हुईं। एक बार तो एक शिक्षिका ने यह तक कहा कि उनके इंग्लिश कोर्स में जुड़ने से उनके परिवार वालों को दिक़्क़त हो रही है। वे नहीं चाहते कि उनका समय बच्चों से हटकर कहीं और लगे। ऐसे कारण पुरुष शिक्षकों के साथ कभी नहीं दिखे। तकनीकी रूप से भी कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद महिला शिक्षकों की सहभागिता कार्यपत्रक निर्माण, सहायक सामग्री निर्माण, असाइनमेंट पूरा करने, चर्चा में सक्रिय

चित्र 2 : एक शिक्षिका के द्वारा बनाया गया पोस्टर

रहने में अधिक रही।

इन सभी कारणों को लिखने का उद्देश्य तुलना करने के साथ-साथ एक बारीक़ विश्लेषण करना भी है कि आख़िर ख़ुद के क्षमतावर्धन के लिए कौन अधिक प्रयासरत है और ऐसा क्यों है? क्या इसका सम्बन्ध कक्षा प्रक्रिया में भी देखने को मिलता है। अगर हम कुछ बारीक़ अवलोकन करें तो शायद यह अन्तर बहुत ही स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ें, लेकिन इसकी बातचीत फिर कभी। फ़िलहाल इन कारकों को संवेदनशीलता के साथ समझना ज़रूरी है जिससे किसी भी शिक्षक के साथ मिलकर बेहतर योजना बनाई जा सके।

3. बातचीत करने का कौशल

सभी विषयों में शिक्षकों के साथ इन दिनों कार्य करने के दौरान कुछ और बातों का भी ध्यान रखना बहुत ज़रूरी लगा। उदाहरणार्थ, विषयवस्तु को सरल भाषा में रखने से शिक्षकों

की रुचि बनी रहती है। भाषा अगर अधिक जटिल या उबाऊ होती है तो शिक्षक अपने फ़ोन को म्यूट कर चर्चा से कटने लगते हैं। इसके साथ ही ये भी समझ आ रहा था कि बातचीत के दौरान प्रयोग किए जाने वाले पीपीटी को लेखन सामग्री से भरने की बजाय चुनिन्दा महत्त्वपूर्ण बिन्दु (चित्र के साथ हो तो और भी बेहतर) रखना ज़्यादा प्रभावी है। इससे शिक्षकों का ध्यान पीपीटी को पढ़ने की बजाय सुगमकर्ता की बातों की ओर अधिक रहता है। चूँकि हम प्रतिभागियों के चेहरे के भाव नहीं देख सकते जिससे उनकी प्रतिक्रिया का अन्दाज़ा भी लगाना मुश्किल होता है, अतः ऑनलाइन चर्चाओं में बातचीत के दौरान अपनी आवाज़ को सम्मानजनक और शान्त रखना भी बेहद ज़रूरी है। इसलिए कब, कौन-सी बात उन्हें बुरी या बोझिल लग सकती है यह तय नहीं किया जा सकता। एक सुगमकर्ता में यह गुण बेहद आवश्यक है कि कैसे कम शब्दों में अपनी बातों को सटीक तरीक़े से रखे। बातचीत का दोहराव, सुनी-सुनाई बातों को रखना, प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर या स्पष्ट उत्तर की दिशा में बढ़ने में मदद न करना, शिक्षकों को बातचीत में निरन्तरता बनाए रखने से रोकता है जिसे यथासम्भव कम करने का प्रयास करना चाहिए।

6. नीचे दिए गए चित्रों में से सबसे अलग चित्र कौन सी है और क्यों? ध्वनि जागरूकता को ध्यान में रखते हुए सही विकल्प चुनें।

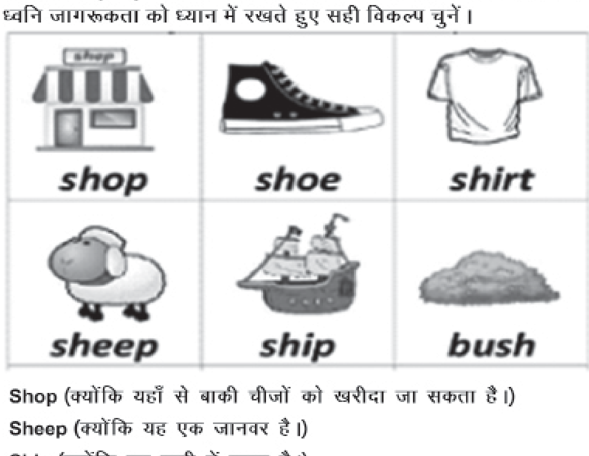

Shop (क्योंकि यहाँ से बाकी चीजों को खरीदा जा सकता है।)
Sheep (क्योंकि यह एक जानवर है।)
Ship (क्योंकि यह पानी में रहता है।)
Bush (क्योंकि इसकी प्रथम ध्वनि ब है, जबकि अन्य वस्तुओं की श है)

चित्र 3 : भाषा के सवाल का उदाहरण

जब शिक्षकों के साथ बेहतर चर्चाएँ की जाती हैं तो उन चर्चाओं से निकलने वाले परिणामों के कक्षा में जाने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसके कई उदाहरण पिछले दिनों होने वाली मोहल्ला कक्षाओं में भी देखने को मिले जहाँ शिक्षक ऑनलाइन चर्चाओं में की गई बातों को बच्चों के साथ समूह में करते दिखे और परिणाम से ख़ुद भी अचम्भित हुए। ऐसे उदाहरणों में पाँचवीं कक्षा में बहुत कम बोलने वाली एक बच्ची द्वारा आत्मविश्वास के साथ धारा प्रवाह कविता सुनाना और कक्षा 1 के बच्चे का बहुत आसानी से किन्हीं दो समूह की वस्तुओं को गिनकर, उनमें तुलना कर कम-अधिक की पहचान करना शामिल है।

ऑनलाइन चर्चाओं में दोनों तरफ़ से बातचीत को प्रभावी बनाने के लिए ऊपर दिए गए बिन्दुओं को अपनाना बेहद ज़रूरी है।

4. बोलने से ज़्यादा ज़रूरी ध्यान से सुनना

कार्यशाला, शिक्षक अधिगम केन्द्र और विद्यालय भ्रमण के दौरान होने वाली चर्चाओं में शिक्षक अकसर अपने सवाल या उलझनों को बेझिझक पूछ लेते हैं, लेकिन ऑनलाइन चर्चाओं में ऐसा करने में उन्हें दिक़्क़तों का सामना करना पड़ता है। इसके पीछे कई कारण होते हैं, जैसे– सुगमकर्ता का बिना रुके बोलते चले जाना, अपनी बात रखने लायक़ परिस्थिति का न होना, अपने सवाल को अधिक महत्त्वपूर्ण न समझना और सुगमकर्ता की तरफ़ से इसके लिए प्रोत्साहन न होना, ऑनलाइन मंच के लिए झिझक होना, आदि। ऑनलाइन चर्चाओं में अकसर शिक्षकों को लगता है कि अन्य शासकीय कार्यशालाओं की तरह इसमें सिर्फ़ सुनना है। इन कारणों की वजह से किसी सवाल या बात को दोहराने के लिए शिक्षक ऑनलाइन मंचों में झिझकते हैं। इसलिए यह और भी ज़रूरी हो जाता

है कि जब शिक्षक बोल रहे हों तो उन्हें पूरा समय देकर सुनें (इसका यह मतलब कतई नहीं है कि समय सीमा का ध्यान न रखा जाए)। इसके साथ ही सवालों को अस्पष्ट और उलझन भरे तरीक़े से रखने से भी शिक्षक कई बार प्रतिक्रिया देने से बचते हैं। कई कार्यशालाओं के दौरान मैंने अनुभव किया कि सुगमकर्ता की तरफ़ से एक ही सवाल का दोहराव होता है जिससे शिक्षकों में शान्ति छा जाती है। साथ ही, कभी-कभी सवालों को ऐसे पूछा जाता है जिससे शिक्षक सोच में पड़ जाते हैं कि क्या जवाब दिया जाए, जैसे– 'मौखिक भाषा के महत्त्व के बारे में आपके क्या विचार हैं?'। वहीं कुछ सवाल इतने सटीक और स्पष्ट होते हैं कि शिक्षकों से तुरन्त प्रतिक्रिया मिलने लगती है, जैसे– 'ऐसा क्यों होता है कि अकसर घर पर अपनी मातृभाषा में धड़ल्ले से बोलने वाले छात्र कक्षा में बोलने में झिझक महसूस करते हैं?'। शिक्षकों के साथ बातचीत करते समय मैं यह भी ध्यान रखती हूँ कि उनके नाम से उन्हें सम्बोधित करूँ जिससे वे उत्साहित हों, बातचीत में अपनी उपस्थिति रेखांकित होने का गर्व महसूस हो और ख़ुद के विचारों को रखने का महत्त्व भी समझें। साथ ही इस बात का ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि बातचीत उबाऊ और नीरस न हो। मैं स्वयं भी ऐसी चर्चाओं में शामिल नहीं होना चाहती हूँ जिन्हें सुनकर नींद आने लगे, इसलिए मैं ख़ुद भी यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती हूँ कि मेरी बातों में नीरसता न हो और कोई बोर नहीं हो रहा हो। इसे सुनिश्चित करने के लिए प्रतिभागी का नाम लेकर बोला जाना बहुत आवश्यक होता है।

कई बार शिक्षकों की तरफ़ से जैसी तैयारी की अपेक्षा होती है, वो दूसरी अन्य व्यस्तताओं की वजह से नहीं कर पाते, जैसे– कोई लेख पढ़ना, वीडियो देखना, असाइनमेंट करना, आदि, लेकिन फिर भी चर्चाओं में उनके अनुभव और चुनौतियों को शामिल ज़रूर करती हूँ, जैसे– प्रिंट रिच की चर्चा में एक शिक्षक किताबों से सम्बन्धित गतिविधि (जो चर्चा से पहले प्रतिभागियों के साथ साझा

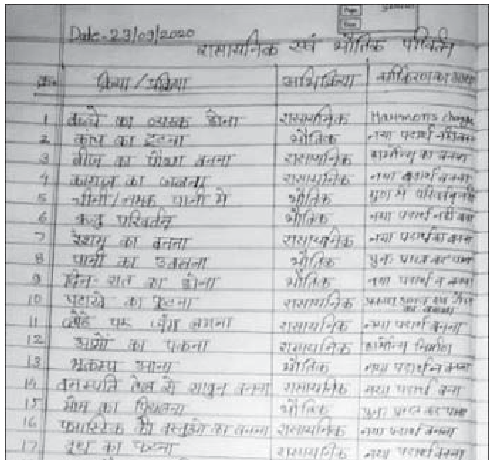

चित्र 4 : एक शिक्षिका के द्वारा भेजा गया असाइनमेंट

की जा चुकी होती थी) देखना भूल गए थे, बावजूद इसके उन्होंने अपने अनुमान से कुछ गतिविधियाँ बताईं जिनका उपयोग कक्षा में किया जा सकता है। ऐसे कई प्रयास करने से शिक्षक न सिर्फ़ अपने विचारों को रखने में सहज होते हैं बल्कि उनके विचारों को महत्त्व दिया जाए तो उत्साहित होकर अपनी कक्षा में प्रयास भी करते हैं।

ध्यान से सुनने से शिक्षक कई बार अपनी परेशानियों को भी रखते हैं जिनमें अकादमिक के साथ-साथ उनकी कुछ व्यक्तिगत परेशानियाँ भी होती हैं, जैसे– एक शिक्षक ने चर्चा के दौरान साझा किया कि वो अपने स्कूल में बहुत सारे प्रयास करना चाहते हैं और कर भी रहे हैं, लेकिन जब अपने सहकर्मी को बच्चों से अन्य काम करवाते देखते हैं (सफ़ाई करना, पानी लाना, आदि) तो बहुत ग़ुस्सा आने के बावजूद उनसे कुछ कह नहीं पाते और उनकी वजह से बच्चों का ध्यान केन्द्रित नहीं हो पाता है। इसी तरह एक महिला शिक्षिका ने कहा कि वो जब स्कूल जाती थीं तो कुछ-न-कुछ पढ़ती रहती थीं और बच्चों को सुनाती थीं, लेकिन इस महामारी के दौरान घर में रहने से उन्हें पढ़ने का समय बमुश्किल मिलता है। ऐसा लग रहा है कि उनका सीखना रुक-सा गया है।

5. सम्पर्क में बने रहना बेहद ज़रूरी

लगातार घर की चारदीवारी के अन्दर रहने से शिक्षकों में भी झुँझलाहट और बोरियत दिखने लगती है, इस दौरान अगर उनका हालचाल बस पूछ लें तो उन्हें अच्छा लगता है। इसके लिए एक मैसेज भी पर्याप्त है। सम्पर्क में बने रहने से शिक्षकों को कुछ कहानियाँ, लेख पढ़ने या वीडियो देखने के लिए प्रोत्साहित करना भी आसान होता है साथ ही हम उनकी रुचि भी जान पाते हैं।

मैं सम्पर्क में बने रहने के लिए कोई अतिरिक्त प्रयास नहीं करती हूँ। अकसर फ़ोन पर बात करना, त्योहारों में या जन्मदिन पर व्हाट्सएप मैसेज कर देना मुझे पर्याप्त लगता है। साथ ही कई बार शिक्षक मेरे द्वारा लगाए गए व्हाट्सएप स्टेटस में किताबों, चर्चाओं के बारे में इच्छा ज़ाहिर करते हैं जिससे उनकी रुचि भी पता चल जाती है।

इन्हीं सारी बातों को मैं चर्चा के दौरान आवश्यक रूप से ध्यान में रखती हूँ जिससे शिक्षकों के साथ अधिक-से-अधिक जुड़ पाऊँ और उन्हें मदद कर पाऊँ, साथ ही मेरी समझ में भी इज़ाफ़ा हो पाए। यह सारे कारक हमपर भी एक सवाल उठाते हैं कि क्या हम सभी इतनी ज़िम्मेदारियों के साथ ख़ुद के क्षमतावर्धन के लिए कार्य कर पाते हैं?

निष्कर्ष

इन एक-डेढ़ वर्षों में मुझे कई बार ये आभास हुआ कि मेरे पास ख़ुद के क्षमतावर्धन के लिए बहुत समय होता है, लेकिन अकसर उसका पूरा उपयोग नहीं कर पाती हूँ। शिक्षकों के साथ भी कुछ ऐसा ही है। जब स्कूल बन्द हो और बच्चों के साथ भी अपेक्षित मिलना जुलना न हो रहा हो तो पहली बात तो कई शिक्षकों को ख़ुद के क्षमतावर्धन की ज़रूरत ही महसूस नहीं होती है। जिन्हें होती है वे भी अपने समय का पूरा उपयोग नहीं कर पाते हैं। या कई बार तो उन्हें सीखने के लिए उपयुक्त मंच भी नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में इस आलेख में उद्धृत कारकों का ध्यान रखते हुए ऐसे मंच योजनाबद्ध तरीक़े से उपलब्ध कराना शिक्षकों के सीखने के लिए कारगर तो हैं ही, बल्कि स्वयं के लिए भी सीखने के अनन्त अवसर लाते हैं। इसलिए यह बेहद ज़रूरी है कि हम निरन्तर जिन भी परिस्थितियों में, जाने-अनजाने जो कुछ भी सीखें, लेकिन इसके समानान्तर पूर्णतः मानसिक रूप से सजग होकर भी हमें स्वयं के क्षमतावर्धन पर कार्य करना चाहिए। पिछले दिनों के अनुभव से हम ये तो कह ही सकते हैं कि बच्चों के साथ ऑनलाइन शिक्षा अधिक कारगर नहीं होती है, लेकिन वयस्कों के लिए इन्टरनेट एक बहुत अच्छा माध्यम है कुछ नया सीखने का, अपने कौशलों पर कार्य करने का, उन्हें सँवारने का। इसके साथ ही कई बार हमें लगता है कि क्षमतावर्धन के लिए आदर्श परिस्थिति का होना आवश्यक है, जैसे– शान्त वातावरण, समय, किसी तरह की बाधा न होना, ज़रूरी सामग्री होना, आदि, लेकिन कई बार बहुत सारे लोग विपरीत परिस्थितियों में भी ख़ुद के क्षमतावर्धन पर कार्य करते हैं। अगर आपने *Pursuit of Happiness* फ़िल्म देखी है (नहीं देखी है तो ज़रूर देखिए) तो वहाँ से इसके उदाहरण ले सकते हैं।

इस दौरान मैंने यह भी समझा कि कैसे समय और परिस्थिति के अनुसार हमारे क्षमतावर्धन के तरीक़ों में बदलाव होना ज़रूरी है। अगर पुराने तरीक़ों को हूबहू ऑनलाइन चर्चाओं में लागू करने की कोशिश करेंगे तो यक़ीनन अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे। इसलिए ज़रूरी है कि दूसरों के क्षमतावर्धन के लिए हम ख़ुद के क्षमतावर्धन के प्रति भी सजग रहें और इसके लिए निरन्तर प्रयास करते रहें।

अर्चना ने राँची विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में पढ़ाई की है। वे चार साल से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। पिछले दो वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन जांजगीर चाँपा में हैं। इनकी विज्ञान लेखन में रुचि है।
सम्पर्क : archana.kumari1@azimpremjifoundation.org , asmithu0@gmail.com